Shodhankur Research Journal

Online Monthly September 2024 VOL -01 ISSUE-I

04

मुनव्वर राना की ग़ज़लों में अभिव्यक्त माँ

डॉ. मनोज पाटील
हिंदी विभाग प्रमुख
भुसावल कला, विज्ञान एवं पु. ओं. नाहाटा वाणिज्य महाविद्यालय,
भुसावल जि.जलगाँव

हिन्दी साहित्य में काव्य की विविध विधाओं में में गज़ल विधा सर्वाधिक प्रिय मानी जाती है। हिन्दी साहित्य में गजल ने विरोधी काव्य में अपनी भूमिका निभाई है। हिन्दी गजल का विकास में सूफी साधकों और सूफी विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान है। आज हिन्दी साहित्य में गजल ने विशेष स्थान प्राप्त किया है। गजल आम आदमी की मानसिकता और दर्द को अभिव्यक्त करने का सफल माध्यम रहा है। आधुनिक गजलकारों में सरोज खान, देवेन्द्र शर्मा इंद्र, डॉ हितेश व्यास, डॉ हरजीत सिंह, दिनेश शुक्ल, माहेश्वरी तिवारी, सरला टंडन, भगवानदास जैन, सावित्रि, गोपाल परदेष, आलम खुर्शी आदि के महत्वपूर्ण नाम सामने आते है उनमें मुनव्वर राना की गजल महत्वपूर्ण माना जाता है।

गजलकार समाज में घटीत घटनाओं को साहित्य के माध्यम से व्यक्त करता है। मुनव्वर राना का 'माँ' नामक गजल संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस गजल संग्रह के संदर्भ में स्वयं लिखते है कि, '' मैं पुरी ईमानदारी से इस बात का तहरीरी इकरार करता हूँ कि मैं दुनिया के सबसे मुक़द्दस और अजीम रिश्ते का प्रचार सिर्फ इसलिए करता हूँ कि अगर मेरे शेरे पढ़कर कोई भी बेटा माँ की ख़िदमत और ख़याल करने लगे , रिश्तो का ऐहतेराम करने लगे तो शायद इसके बदले में मेरे कुछ गुनाहों का बोझ हलका हो जाए।''[1]

आधुनिक युग में मानवता का व्यवहार समाप्त हो चुका है। व्यक्ति धन के पीछे भाग रहा है स्वयं के परिवारवालों को वह वक्त भी नहीं देता। इसका परिणाम व्यक्ति के स्वभाव में होकर रिश्तों के टूटने पर होता है। व्यक्ति किस न किसी स्वार्थ प्रवत्ति के कारण किसीसे जूड़ा हुआ दिखाई देता है। समाज में आज भी ऐसे रिश्ते दिखाई देते है वह सिर्फ नि स्वार्थ भाव से जूड़े है। परिवार में माँ–पिता, बहन–भाई आदि जो स्वार्थ से दूर दिखाई देते है। परिवार में माँ घर के आंतरिक बंधनों जूडे रहने का सफन प्रयास करती है। घर में बच्चों का सुबह से रात के सोते वक्त तक खयाल रखती है। बच्चे के लंबी उम्र की शुभ कामनाएँ देती है। इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है–

'' अभी जिन्दा है माँ मेरी, मुझे कुछ भी नहीं होगा
मैं घर से जब निकलता हूँ, दुआ भी साथ चलती है
जब भी कश्ती मेरी सैलाब में आ जाती है
माँ दुआ करती हुई ख्याब में आ जाती है।'' [2]

वैज्ञानिक तरक्कि के कारण व्यक्ति को सुख प्राप्त हुआ है। इस सुख का उपभोग समय के अनुसार लेता है लेकिन वह उपभोग लेते समय बहुत सार मुस्किलों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार जीवनयापन करते वक्त कौन–सी मुसिबत कब आ सकती है कोई नहीं जानता। बचपन में जब कोई मुसिबत आती है तो बच्चा माँ की गोद में आकर छुप जाता है। बच्चा माँ की गोद में आकर सुरक्षित होने का महसूस करता है। लेकिन युवा अवस्था में माँ बच्चे के साथ मुसीबतो के दिनो में साथ रहती इै। अक्सर किसी पर मुसीतब आते देखकर स्वार्थी मित्र साथ छोड देते है लेकिन माँ मुसीतब में भी साथ रहती है। इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है

'' अब भी चलती है जब आँधी कभी ग़म की 'राना'
माँ की ममता मुझे बाँहो में छुपा लेती
मुसीबत के दिनों में माँ हमेशा साथ चलती है
पयम्बर क्या परेशान में उम्मत छोड़ सता है।''[3]

©Copyright 2024 SSMRJ. All Rights Reserved

Shodhankur Research Journal

Online Monthly September 2024 VOL -01 ISSUE-I

समाज में पारिवारिक संबंधों में अंधकार छा गया है। व्यक्ति आने अपने कार्यो में व्यस्त रहने लगा है। समाज में सामाजिक संबंधों का निर्वाह करने में रिक्तता आ चुकी है। घर में किसी भी व्यक्ति को दो मीनट बात करने की फूर्सत नहीं है। वह अपने अपने कार्य करते रहते है। आज के युग में केवल माँ के व्यवहार के प्रति संदेह नहीं किया जा सकता लेकिन समाज में हर व्यक्ति का आंतरीक व्यवहार घृणास्पद दिखाई देता है। ऐसे व्यवहार के प्रति गज़लकार लिखते है

'' मेरी ख़्वाहिश है कि मैं फिर से फरिस्ता हो जाऊ
माँ से इस तरह लिपट जाऊ कि बच्चा हो जाऊ
मेरा खुलूस तो पूरब के गाँव के जैसा है
सुलूक दुनिया का सैतेला माँओं जैसा है।''[4]

इसी प्रकार घर में भाई–भाई बँटवारे के लिह संघर्ष करते है। माँ–पिता की सारी कमाई की हिस्सेदार करते है। इतना ही नहीं वह दोनों एक दुजे के खून के प्यासे हो जाते है। घर की सारी संपत्ती का बँटवारा तो होता है लेकिन माँ–पिता का क्या किया जाए। समाज में बड़े भाई को पिता का दर्जा दिया जाता है वह आपने हिसाब से बँटवारा करता है। जो चाहिए वह लेकर दूसरे भाई को देता है जो अन्य बचती हे वह सबसे छोटा बेटा उसे मिलता है। अंत में माँ–बाप छोटे भाई के हिस्से में आते है। लेकिन जब माँ उसके हिस्से में आती है तो जिस घर में अंधेरा हो वह उजाले में बदल जाता है। इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है

'' किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई
मैं घर में सबसे छोटा था तेरे हिस्से माँ आई
ऐ अँधेरे देख ले मुँह तेरा काला हो गया
माँ ने आँख खोल दीं घर में उजाला हो गया।'' [5]

माँ हमेशा बच्चों के प्रति के बारे में सोचती है। बच्चा कितना भी बडा हो जाए लेकिन माँ के लिए एक बच्चा ही होता है। जब भी शहर से लौटकर बच्चा आता है माँ के आँचल में अपना सिर रखता है। गजलकार इस प्रंसग को गंगा जैसे पवित्र मानते है। गंगा में स्नान करने से सारे पाप धूल जाते है उसी प्रकार माँ के आँचल के पवित्रता के बारे में लिखते है

'' तेरे आगे माँ भी मौसी जैसी लगती है
तेरी गोद में गंगा मइया अच्छा लगती है।''[6]

समाज में लोगों के व्यवहार में स्वार्थता दिखाई देती है। आधुनिक दौर में मित्र भी मन से शत्रु जैसा व्यवहार करता है। समाज के स्वार्थ व्यवहार से घर परिवारों में संदेह वातावरण निमाण हो चुका है। आज के युग में भाई–भाई से रिश्ता नहीं रखता। लेकिन आज परिवार में माँ का व्यवहार बच्चों के प्रति सदा निस्वार्थ का रहा है। माँ के इस व्यवहार की तुलना दुनिया की सारी संपत्ती से बढकर है। माँ की ममता कभी खत्म नहीं होती। माँ अपने बच्चों की खुशी में ही आनी खुशी मानती है। इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है,

'' जहाँ पिछले कई बसरों से काले नाग रहते है
वहाँ इक घोंसला चिड़ियों का था दादी बताती है
यारों को मसर्रत मेरी दौलत पे है लेकिन
इक माँ है जो बस मेरी खुशी देख के खुश है।''[7]

माँ आपने बच्चे के प्रति सचेत रहती है। वह बच्चा घर के बहार निकलता है तब घर वापीस आने तब उसकी राह देखती है। रात के समय में घर के सारे लोगों का खाना खा कर सोने चले जाते है लेकिन अकेली माँ अपने बेटे की राह देखती रहती है। इस संदर्भ में मुनव्वर राना लिखते है.

'' ये ऐसा कर्ज है जो मैं अदा कर नहीं सकता
मैं जब तक घर न लौटूँ मेरी माँ सजदे में रहती है।'' [8]

जब बच्चा शहर में नौकरी के लिए चला जाता है तब माँ–बाप गाँव में अकेले रहते है। शहर के खाने का स्वाद बच्चे को माँ ने भेजे हुए बाँसा खाने का स्वाद अच्छा लगता है। गाँव से

माँ ने भेजा हुआ बाँसे खाने का स्वाद ला जवाब होता है उसमें माँ की ममता भरी हुई होती है, इस संदर्भ में गजलकार माँ का महत्व स्पष्ट करता है,

'' खाने की चीज़ें माँ ने भेजी हैं गाँव से
बसी भी हो गई हैं तो लज्ज़त वही रही।''[9]

जब कोई व्यक्ति हमारे साथ रहता है तब उसकी कीमंत का अंदाजा नहीं होता लेकिन वह व्यक्ति जब दूर चला जाता है उसके न होने का अहसास होता है। घर में जब माँ होती है तब उसकी कीमंत नजर नहीं आती लेकिन माँ के गुजर जाने के बाद उसकी न होने का अहसास होता है। घर में उसकी कमी हमें हर पल ससताती है। उस समय मन में गुजरे हुए दिनों की याद आती है। ऐसा लगता है कि माँ फिर से आ जाए इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है,

'' मैं चाहता हूँ कि फिर से वह दिन पलट जाए
कि माँ के चुल्लू को मेरा गिलास होना पड़े
यहाँ से जानेवाल लौट कर कोई नहीं आया
मैं रोते रहा लेकिन न वापस, जा के माँ आई।'' [10]

घर में माँ के गुजर जाने के बाद घर सूना–सूना लगता है। घर में सबसे जादा समय माँ ही रहती है। जिस प्रकार कबूतर के उडने से छप्पर अकेला हो जाता है वैसे ही घर से माँ के जाने से घर अकेला हो जाता है। इस संदर्भ में गज़लकार लिखते है,

'' वह कबूतर क्या उड़ा छप्पर अकेला हो गया
माँ के आँखें मूँदते ही घर अकेला हो गया।'' [11]

अंत मुनव्वर राना के गजल संग्रह में माँ का महत्व स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। घर परिवार में माँ के रहने से और न रहने से होनेवाली गतीविधियों के संदर्भ में गजल प्रस्तुत किए है। किसी भी बच्चे की माँ आपत्ती के समय अपने बच्चे का साथ देती है। बचपन में वह माँ की गोद में जाता है लेकिन वही युवा अवस्था में माँ से दूर जाता है। जब माँ गुजरती है तब घर परिवार सूना हो जाता है। कभी कभी मन में आता है माँ को वापीस बुला लाए। इस प्रकार गज़लकार मुनव्वर राना ने माँ की ममता के बारे में विचार व्यक्त किए है।

संदर्भ सूची

1) माँ गज़ल संग्रह – मुनव्वर राना पृ. 12
2) पूर्ववत – पृ. 46
3) पूर्ववत – पृ. 41
4) पूर्ववत – पृ. 42
5) पूर्ववत – पृ. 42
6) पूर्ववत – पृ. 44
7) पूर्ववत – पृ.44
8) पूर्ववत – पृ.44
9) पूर्ववत – पृ.44
10) पूर्ववत – पृ. 38
10) पूर्ववत – पृ. 39